License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

याकूब 1:1–18

याकूब के समय में, इस्राएल की 12 जातियों के विश्वासियों के लिए जीवन कठिन था।

उन्होंने कठिनाइयों का सामना किया और कई तरीकों से उनकी परीक्षा ली गई और उन्हें प्रलोभन दिया गया।

याकूब नहीं चाहते थे कि यहूदी विश्वासियों का हौसला टूटे।

वह नहीं चाहते थे कि वे अपनी बुरी इच्छाओं को अपने ऊपर हावी होने दें।

जीवन जीने का वह तरीका मृत्यु की ओर ले जाएगा।

इसके बजाय, याकूब ने उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे अपने विश्वास में मजबूत होते जाएँ।

विश्वासी परमेश्वर से बुद्धि मांग सकते हैं जिसकी उन्हें आवश्यकता है।

वे भरोसा कर सकते हैं कि हर अच्छी चीज़ परमेश्वर से आती है।

वे परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं कि वे उन्हें उनकी आवश्यकताओं के अनुसार स्वतंत्र रूप से प्रदान करेंगे।

यह मार्ग अनन्त जीवन की ओर नई सृष्टि में ले जाता है।

याकूब 1:19–27

परमेश्वर के लोग जो कुछ भी सोचते हैं, मानते हैं, कहते हैं और करते हैं, वह परमेश्वर के वचन से सहमत होना चाहिए। जब ऐसा होता है, तो विश्वासी पवित्र जीवन जी रहे होते हैं।

पवित्र जीवन परमेश्वर की ध्यानपूर्वक सुनने पर आधारित है। यह परमेश्वर के बारे में सच्ची शिक्षाओं का पालन करने पर आधारित है।याकूब ने इसे उस नियम का अध्ययन करने के रूप में वर्णित किया जो स्वतंत्रता देता है। यह मसीह के नियम के बारे में बात करने का एक और तरीका है।

यह संपूर्ण है। यह स्वतंत्रता देता है क्योंकि यीशु विश्वासियों को पाप, मृत्यु और बुराई की शक्ति से मुक्त करते हैं।

जैसे वे सुनते और अध्ययन करते हैं, विश्वासियों को परमेश्वर के वचन को क्रियान्वित करना चाहिए। यह उन्हें बुराई करने से बचने के लिए प्रेरित करता है। यह उन्हें उन लोगों की देखभाल करने के लिए भी प्रेरित करता है जिन्हें मदद की आवश्यकता है।

याकूब 2:1–13

याकूब ने स्पष्ट कर दिया कि यीशु के अनुयायियों को सभी लोगों के साथ आदर से व्यवहार करना चाहिए। उन्हें एक व्यक्ति को दूसरे पर प्राथमिकता नहीं देनी चाहिए।

याकूब ने एक उदाहरण दिया कि उनके समय में धनी और निर्धन लोगों के साथ कैसे व्यवहार किया जाता था। जिस राजकीय व्यवस्था की याकूब ने बात की, वह पुराने नियम से ली गई है। यह मूसा की व्यवस्था में दूसरों के साथ व्यवहार करने के बारे में सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा है। यह सिखाती है कि लोगों को अपने पड़ोसियों से वैसा ही प्रेम करना चाहिए जैसा वे स्वयं से करते हैं।

यीशु ने दिखाया कि इसमें दूसरों पर दया करना भी शामिल है। उन्होंने इसके बारे में एक कहानी मत्ती 18:21–35 में सुनाई।

यीशु के अनुयायियों का न्याय मूसा की व्यवस्था के आधार पर नहीं किया जाएगा। उनका न्याय उस व्यवस्था के आधार पर किया जाएगा जो स्वतंत्रता देती है। याकूब का मतलब था कि विश्वासियों का न्याय परमेश्वर की दया के अनुसार किया जाएगा। इसलिए उन्हें भी दूसरों के साथ दया से पेश आना चाहिए।

याकूब 2:14–26

यदि लोग यीशु में विश्वास करते हैं, तो उनके कार्यों में यह विश्वास दिखाई देना चाहिए। जब विश्वासी अपने विश्वास पर कार्य करते हैं, तो वे अपने शब्दों और कार्यों में परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं। इससे अच्छे कार्य या सत्कर्म करने की ओर मार्गदर्शन मिलता है।

यदि वे अपने विश्वास के अनुसार कार्य नहीं करते हैं, तो इसका अर्थ है कि वे वास्तव में परमेश्वर में विश्वास नहीं करते। याकूब ने ऐसे विश्वास को "मृत विश्वास" के रूप में वर्णित किया। याकूब ने जीवित विश्वास के उदाहरण दिए। उन्होंने बताया कि अब्राहम ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया।

यह बच्चों की बलि देने जैसा नहीं था। इसहाक मारे नहीं गए थे। अब्राहम के इस कार्य ने दिखाया कि वह परमेश्वर को वह चीज़ देने के लिए तैयार थे जो उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण थी। वह ऐसा इसलिए करने के लिए तैयार थे क्योंकि उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया और उन पर भरोसा रखा।

अगला उदाहरण जो याकूब ने दिया वह राहाब था। राहाब ने इस्राएली जासूसों को बचाने के लिए कदम उठाया। इससे यह

दिखा कि उनमें भी परमेश्वर में विश्वास था। अब्राहम और राहाब के कार्य मृत विश्वास के विपरीत थे। क्योंकि उनका विश्वास जीवित था, वे परमेश्वर के साथ सही बनाए गए।

याकूब 3:1–12

जो लोग दूसरों को यीशु के बारे में सिखाते हैं, उनके ऊपर यह ज़िम्मेदारी होती है कि वे सत्य शिक्षा दें। वे परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी होते हैं अपने कहे गए शब्दों के लिए। फिर भी, यह बहुत कठिन होता है कि लोग हमेशा सही, अच्छे और सच्चे शब्द बोलें। याकूब ने इसे जीभ को वश में करना या नियंत्रित करना कहा।

जीभ शरीर का एक छोटा हिस्सा है जिसका लोग शब्द बोलने के लिए उपयोग करते हैं। उनके शब्द यह दिखाते हैं कि उनके हृदय में क्या है। लोगों के शब्द महत्वपूर्ण होते हैं और दूसरों के जीवन में बड़ा प्रभाव डालते हैं। याकूब ने अपने पाठकों को चेतावनी दी कि वे अपने बोले गए शब्दों से बुराई न करें।

कुछ लोग परमेश्वर की अपने सृष्टिकर्ता और पिता के रूप में स्तुति करते हैं, फिर भी वे लोगों को श्राप देते हैं और घृणास्पद बातें कहते हैं। परमेश्वर ने मनुष्यों को बनाया है। उनके बारे में बुरा बोलना यह दिखाता है कि कोई व्यक्ति परमेश्वर से प्रेम नहीं करता और उसकी पूरी तरह से सेवा नहीं करता। यह ऐसा है जैसे कोई पेड़ उस फल को उत्पन्न नहीं करता जिसके लिए वह बना है।

याकूब 3:13–18

याकूब ने दो प्रकार की बुद्धि का वर्णन किया। एक प्रकार की बुद्धि परमेश्वर से स्वर्ग से आती है। याकूब ने दूसरे प्रकार की बुद्धि को पृथ्वी से संबंधित बताया।

याकूब उस प्रकार के जीवन के बारे में बात कर रहे थे जो शैतान की इच्छा के अनुसार चलता है। यह शैतान से मिलने वाली बुद्धि है। जो लोग इस प्रकार से जीवन जीते हैं, वे सबसे पहले अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना चाहते हैं। वे दूसरों की चीज़ों से ईर्ष्या करते हैं और सबसे अच्छी चीज़ें अपने लिए चाहते हैं। इस तरह का जीवन जीने से कई समस्याएं उत्पन्न होती हैं और बुरे काम किए जाते हैं।

स्वर्ग से आने वाली बुद्धि परमेश्वर के मार्ग को दिखाती है, जिसमें वह अपने लोगों से जीने की अपेक्षा करता है। परमेश्वर का मार्ग यह है कि लोग विनम्र और ईमानदार हों। वह चाहते हैं कि लोग उनकी आज्ञा का पालन करें और दूसरों पर दया दिखाएं। वे चाहते हैं कि लोग अपने आसपास के लोगों के साथ शांति बनाएं। पवित्र आत्मा लोगों को परमेश्वर के इस अच्छे, सही और पवित्र मार्ग का अनुसरण करने में सहायता करता है।

याकूब 4:1–17

दुनिया का मित्र होना शैतान की बुद्धि के अनुसार कार्य करना है। शैतान लोगों को पाप पर आधारित बुरी सुख-सुविधाएँ प्रदान करते हैं। यह लोगों को अहंकार से भर देता है और उन्हें और अधिक चीजें चाहने के लिए प्रेरित करता है। यह उन्हें दूसरों के साथ भयानक तरीकों से व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है।

जो लोग इस प्रकार का जीवन जीते हैं, वे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं होते। परमेश्वर लोगों को सच्चा आनंद प्रदान करते हैं, जो उनके निकट होने से आता है। यदि लोग परमेश्वर के निकट आना चाहते हैं, तो उन्हें विनम्र होना चाहिए। उन्हें यह मानना होगा कि उन्हें परमेश्वर की अनुग्रह की आवश्यकता है और उन्हें क्षमा की ज़रूरत है। उन्हें यह समझना होगा कि सही और गलत का निर्णय परमेश्वर ही करते हैं।

यही बात याकूब का मतलब था जब उन्होंने कहा कि परमेश्वर विधिदाता हैं। यह भी वही बात है जब उन्होंने कहा कि परमेश्वर ही न्याय लाते हैं। अन्य विश्वासियों के बारे में बुरा बोलना परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध है। यदि कोई परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध जाता है, तो यह दिखाता है कि वे अभिमान से भरे हुए हैं। अभिमान लोगों को यह विश्वास दिलाता है कि उनकी योजनाएँ अवश्य पूरी होंगी। फिर वे यह स्वीकार नहीं करते कि केवल परमेश्वर ही भविष्य को नियंत्रित करते हैं। याकूब चाहते थे कि विश्वासी भविष्य की योजनाओं का घमंड करने के बजाय प्रतिदिन अच्छे कार्य करें।

याकूब 5:1–11

याकूब ने यहूदी विश्वासियों को लिखा, जो धनी लोगों द्वारा बुरा व्यवहार किया जा रहा था। याकूब ने उन धनी लोगों द्वारा की जा रही बुरी बातों के विरुद्ध लिखा।

वे जो कुछ उनके पास था, उसे अपने तक ही सीमित रख रहे थे। वे यह सुनिश्चित कर रहे थे कि उनके पास वह सब कुछ हो जो वे चाहते थे। वे ऐसा कर रहे थे, भले ही अन्य लोगों के पास पर्याप्त नहीं था। उन्होंने मजदूरों को उनके काम के लिए भुगतान नहीं किया। अदालत में उन्होंने उन लोगों के साथ अन्याय किया जिन्होंने कोई गलत काम नहीं किया था। याकूब ने उन्हें चेतावनी दी कि परमेश्वर उन्हें इसके लिए न्याय करेंगे। वे यीशु के पृथ्वी पर लौटने के बाद कष्ट उठाएंगे।

याकूब ने यह चेतावनी उन लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए साझा की जो अमीरों द्वारा बुरी तरह से व्यवहार किए जा रहे थे। जबकि वे कष्ट सह रहे थे, यहूदी विश्वासी परमेश्वर की कोमल दया और उनके प्रति प्रेमपूर्ण चिंता पर भरोसा कर सकते थे। उन्हें किसानों की तरह धैर्यवान होना चाहिए। उन्हें अय्यूब की तरह भी धैर्यवान होना चाहिए। भविष्यवक्ताओं की तरह, उन्हें अपने विश्वास में मजबूत रहना चाहिए और हार

याकूब *5:12–20*

नहीं माननी चाहिए। उन्हें एक-दूसरे का न्याय नहीं करना चाहिए बल्कि परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए कि वही न्यायाधीश हैं।

याकूब 5:12–20

विश्वासियों के शब्द और प्रार्थनाएँ शक्तिशाली होती हैं।

विश्वासियों को ईमानदार होना चाहिए ताकि अन्य लोग पूरी तरह से उन पर भरोसा कर सकें जो वे कहते हैं।

याकूब तीन तरीकों का उल्लेख करते हैं जिनसे विश्वासी अपने शब्दों और प्रार्थनाओं का उपयोग एक-दूसरे की सहायता के लिए कर सकते हैं।

एक तरीका यह है कि जब वे खुश होते हैं तो परमेश्वर की स्तुति में गीत गाएं। इससे अन्य विश्वासियों को प्रोत्साहन मिलता है।

एक और तरीका यह है कि जब वे मुसीबत में हों या बीमार हों तो एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। कलीसिया के बुजुर्ग और जो भी परमेश्वर में विश्वास रखते हैं, वे यह कर सकते हैं। वे एक-दूसरे के लिए यीशु के नाम में प्रार्थना कर सकते हैं। वे एक-दूसरे को अभिषेक कर सकते हैं जैसे जैतून के पेड़ों से तेल। यह दिखाता है कि वे यीशु पर प्रभु के रूप में विश्वास करते हैं जो चंगाई लाते हैं।

एक और तरीका है कि वे एक-दूसरे से अपने पापों के बारे में खुलकर बात करें। अपने पापों को स्वीकार करना विश्वासियों को विनम्र रहने और एक-दूसरे का न्याय न करने में मदद करता है। यह उन्हें एक-दूसरे को पाप से बचने में मदद करने की भी अनुमति देता है। इससे विश्वासियों को उन जीवनशैलियों से दूर रहने में मदद मिलती है जो मृत्यु की ओर ले जाती हैं।